Self respect

10-06-2014

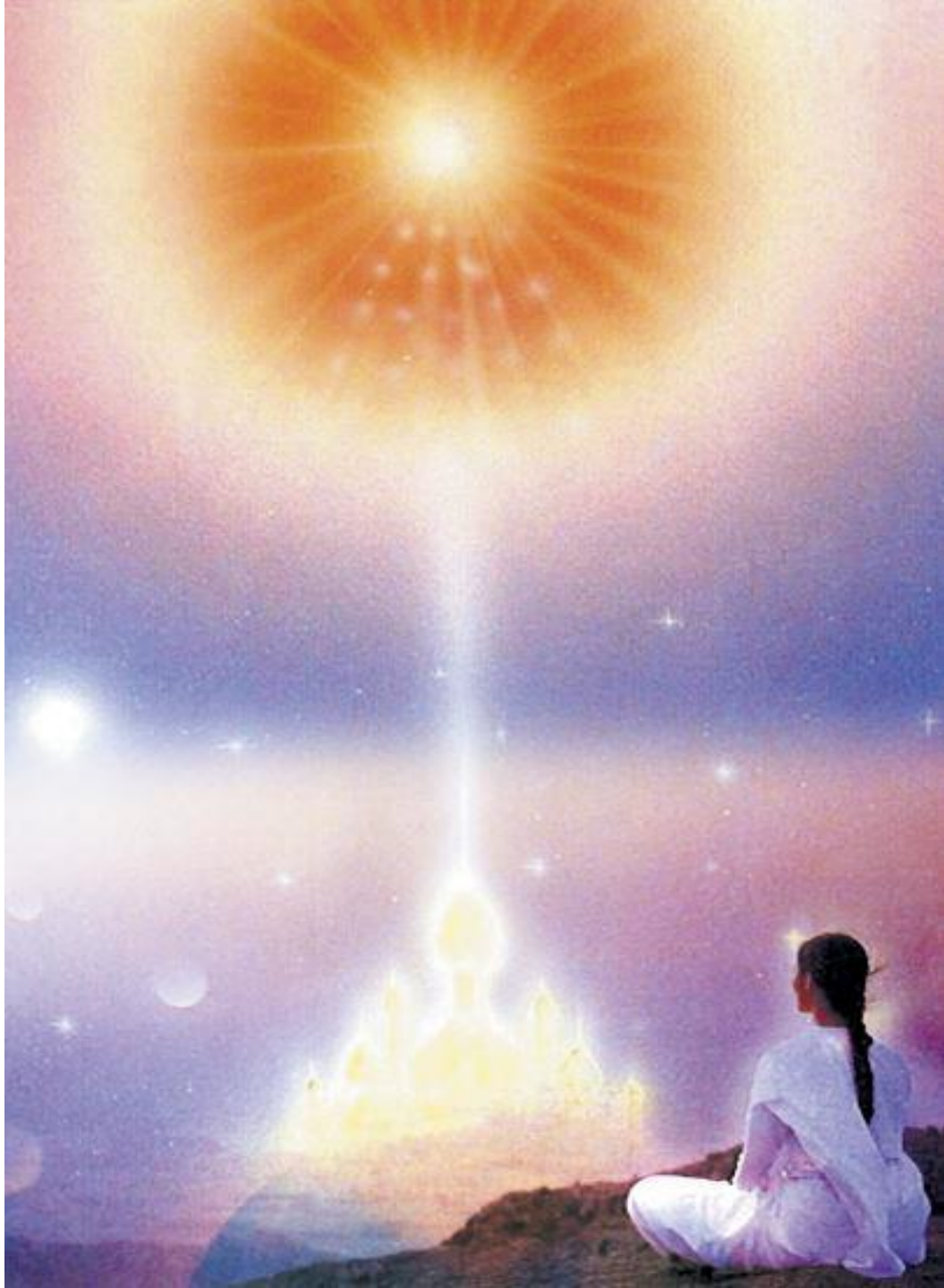

✓पतित हैं तो पुकारते हैं | अब तुम आत्मा जानती हो वह पतित-पावन बाप इस तन में आया है | यह भूलना नहीं है, हम उनके बने हैं | यह सौभाग्य तो क्या पदम भाग्य की बात है |

✓बहुत लवली बाप है, ऐसे बाप को तो बहुत प्यार से याद करना चाहिए | तुम भी बाप के लवली बच्चे हो ना | बाप को याद करते आये हो |

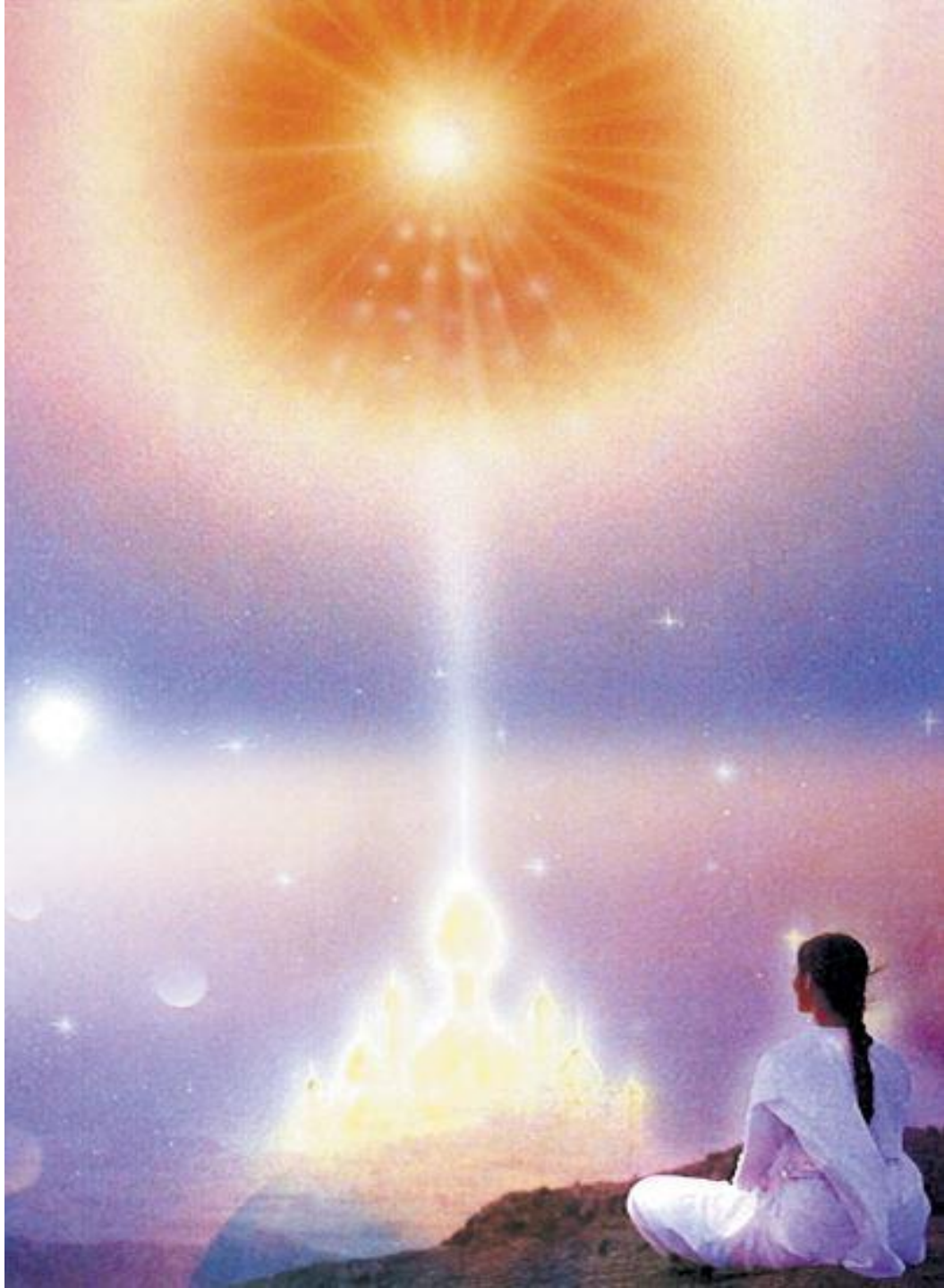

- ✓ज्ञान का सागर एक ही बाप है | बाकी वह सब हैं भक्ति के सागर | ज्ञान से सद्गति होती है | अभी तुम बच्चे ज्ञानवान बने हो | बाप ने तुम्हें अपना और सारे चक्र का भी परिचय दिया है, जो और कोई दे न सके इसलिए बाप कहते हैं तुम बच्चे हो स्वदर्शन चक्रधारी |
- ✓ शिव की भी बारात कहते हैं | बाबा कहते हैं यह हमारी बारात है | तुम सब भक्तियाँ हो, मैं हूँ भगवान् | तुम सब सजनियाँ हो, बाबा आया है तुमको श्रृंगार कर ले जाने | कितनी ख़ुशी होनी चाहिए | अब तुम सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को जानते हो | तुम बाप को याद करते-करते पवित्र बन जाते हो तो पवित्र राजाई मिलती है |

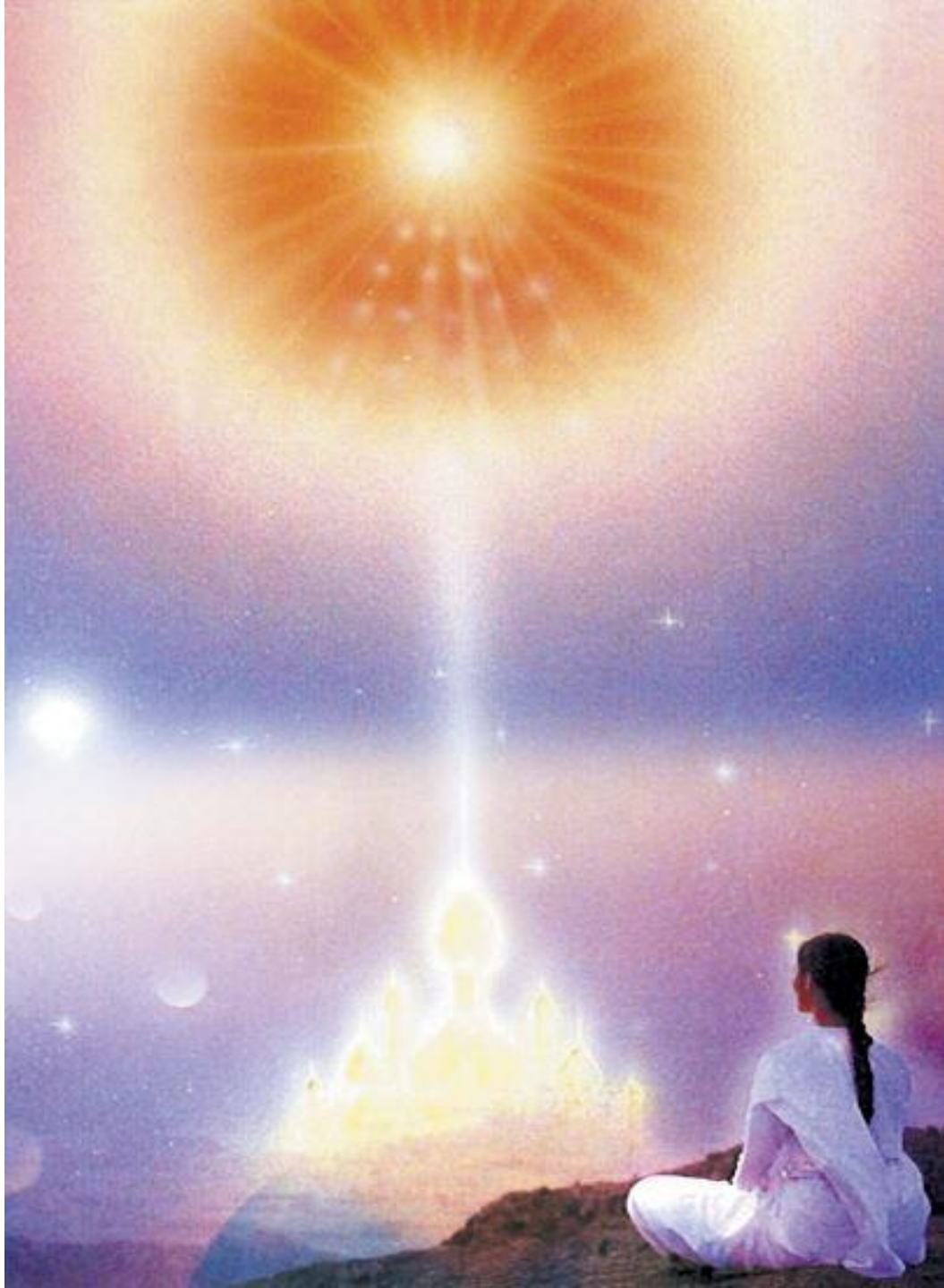

✓अभी तुम बच्चे जानते हो सचमुच वैकुण्ठ आ रहा है | हम भविष्य में यह बनेंगे | श्रीकृष्ण पर कलंक लगाते हैं, वह सब रांग है | तुम बच्चों को पहले नशा चढ़ना चाहिए | शुरू में बहुत साक्षात्कार हुए थे फिर पिछाड़ी में बहुत होंगे, ज्ञान कितना रमणीक है | कितनी ख़ुशी रहती है | भक्ति में तो कुछ भी ख़ुशी नहीं रहती | भक्ति वालों को यह थोड़ेही मालूम रहता है कि ज्ञान में कितना सुख है, भेंट कर न सकें | तुम बच्चों को पहले यह नशा चढ़ना चाहिए | यह ज्ञान सिवाए बाप के कोई भी ऋषि-मुनि आदि दे नहीं सकते | लौकिक गुरु तो किसको भी मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बता नहीं सकते |

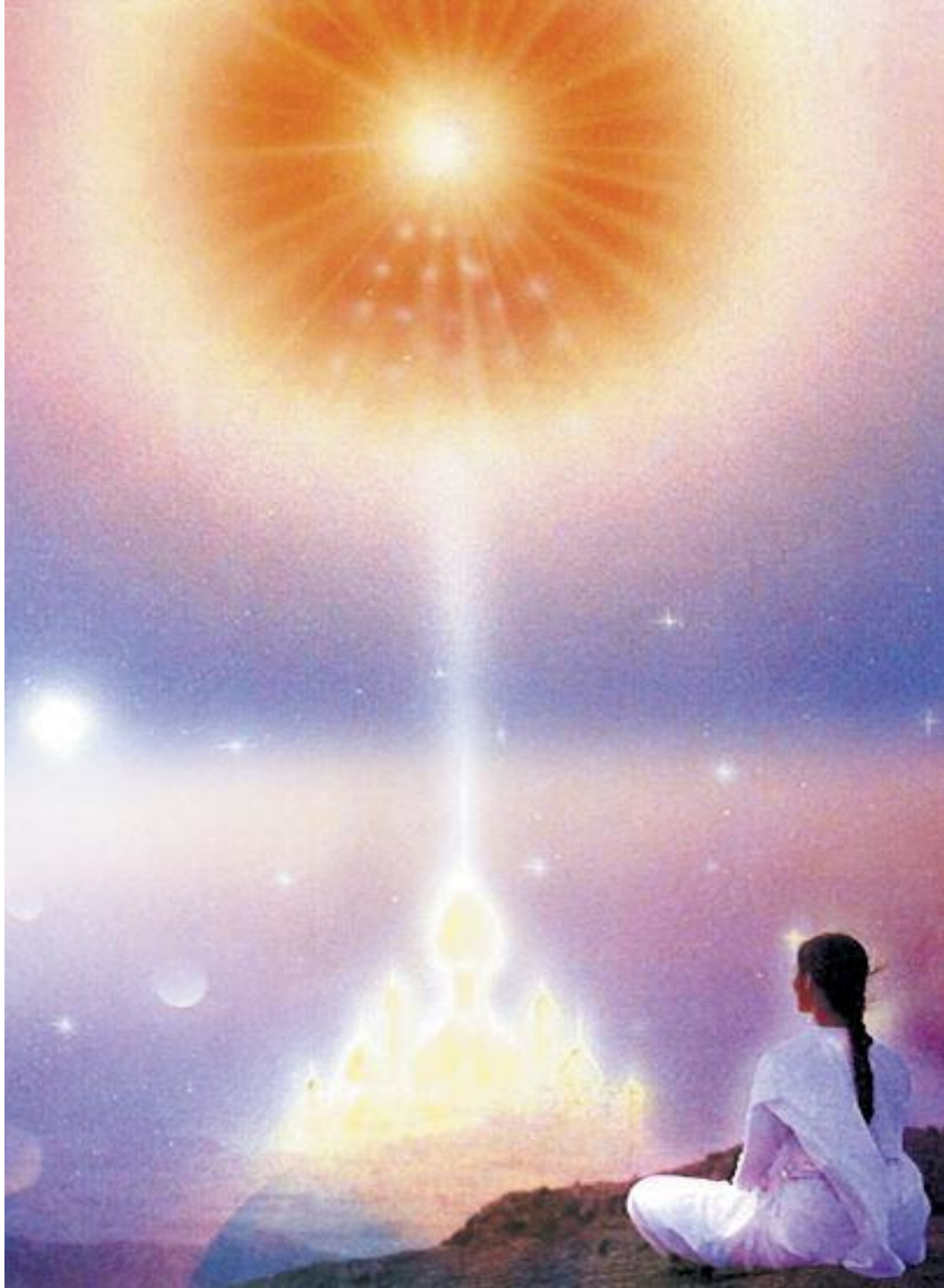

✓तुम तो राजऋषि हो | 'ऋषि' अक्षर पवित्रता का है | तुम राजऋषि हो तो ज़रूर पवित्र होंगे | थोड़ी बात में फेल होने से फिर राजाई मिल न सके | प्रजा में चले जाते हैं | कितना घाटा पड़ जाता है |

✓यह बेहद का बना-बनाया ड्रामा है | सिवाए बाप के कोई समझा न सके | तो तुम बच्चों को कितनी ख़ुशी होती है | जैसे बाप की बुद्धि में सारा ज्ञान है वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी है | बीज और झाड़ को समझना है |

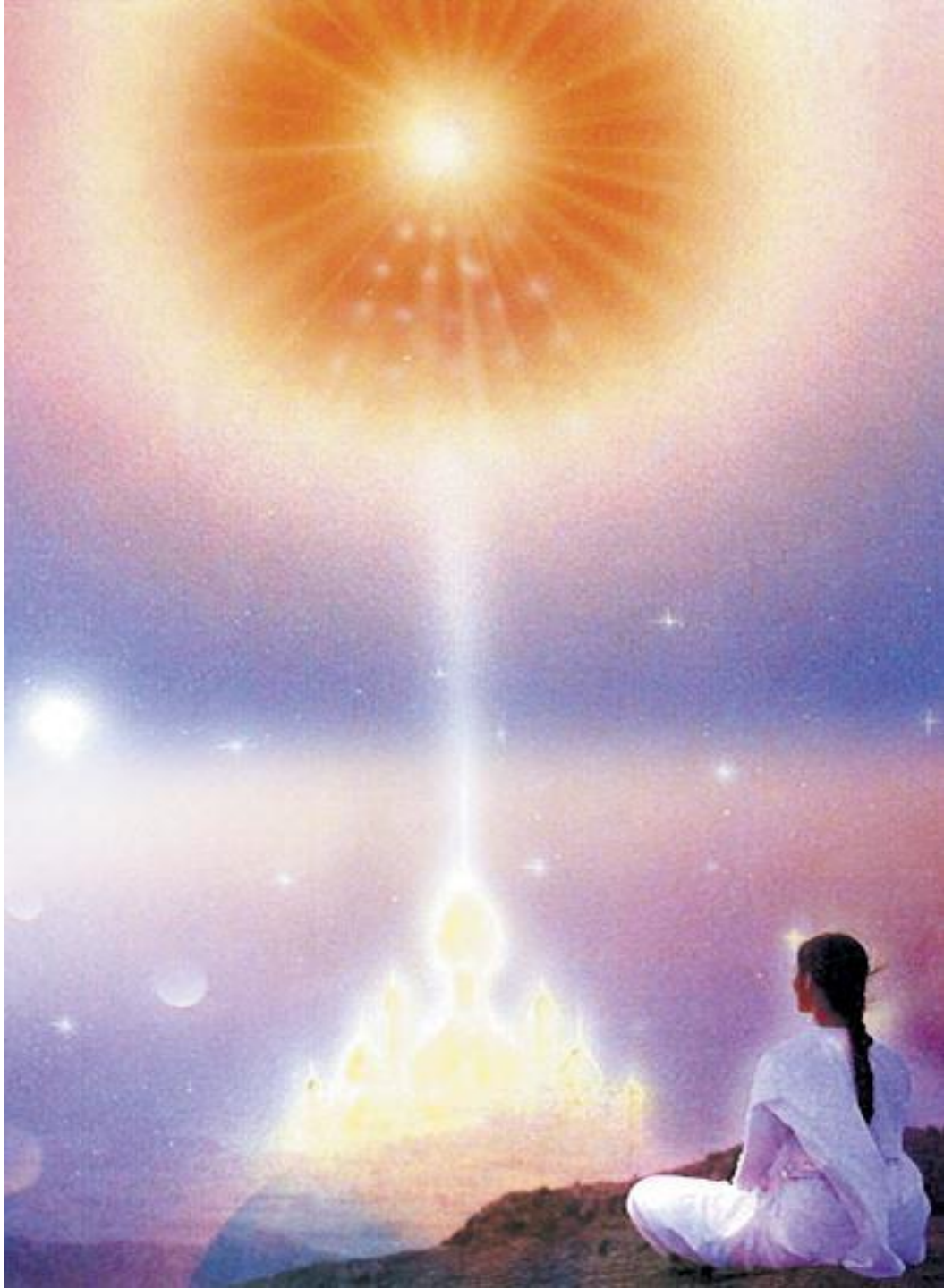

- ✓तुम जितना सुख देखते हो उतना और कोई नहीं देखते | तुम हीरो-हीरोइन हो, विश्व पर राज्य पाने वाले हो तो अथाह ख़ुशी होनी चाहिए ना | भगवान् पढ़ाते हैं! कितना रेग्युलर पढ़ना चाहिए, इतनी ख़ुशी होनी चाहिए | बेहद का बाप हमें पढ़ाते हैं | राजयोग भी बाप ही सिखलाते हैं | कोई शरीरधारी तो सिखला न सकें | बाप ने आत्माओं को सिखलाया है, आत्मा ही धारण करती है | बाप एक बार ही आते हैं पार्ट बजाने |

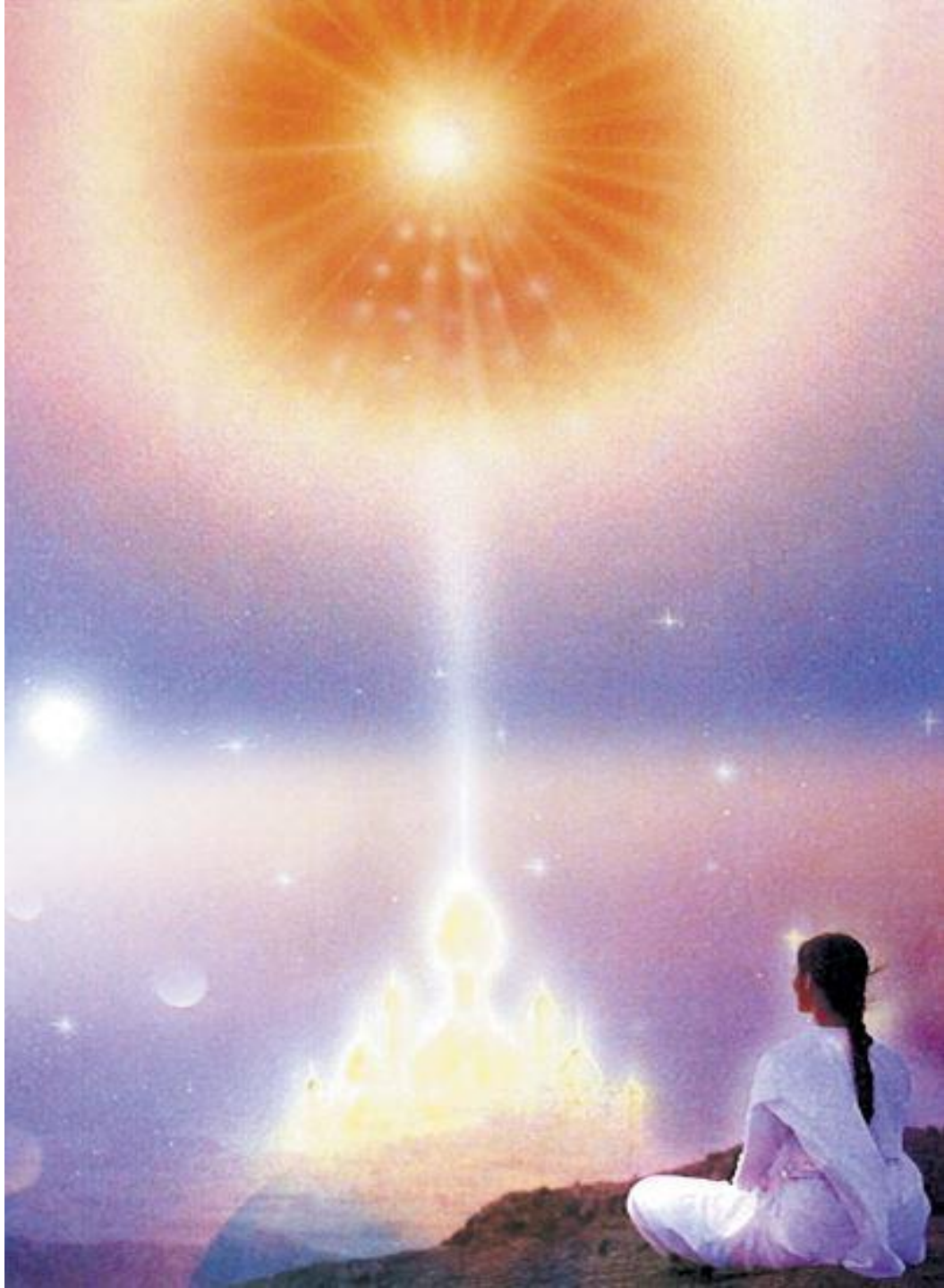

✓आत्माओं को बाप पढ़ाते हैं | देवताओं को नहीं पढ़ायेंगे | वहाँ तो देवतायें ही पढ़ायेंगे | संगमयुग पर बाप ही पढ़ाते हैं, पुरुषोत्तम बनाने के लिए | तुम ही पढ़ते हो | यह संगमयुग एक ही है, जब तुम पुरुषोत्तम बनते हो |

✓ब्राह्मण जीवन की प्रॉपर्टी और पर्सनालिटी का अनुभव करने और कराने वाली विशेष आत्मा भव

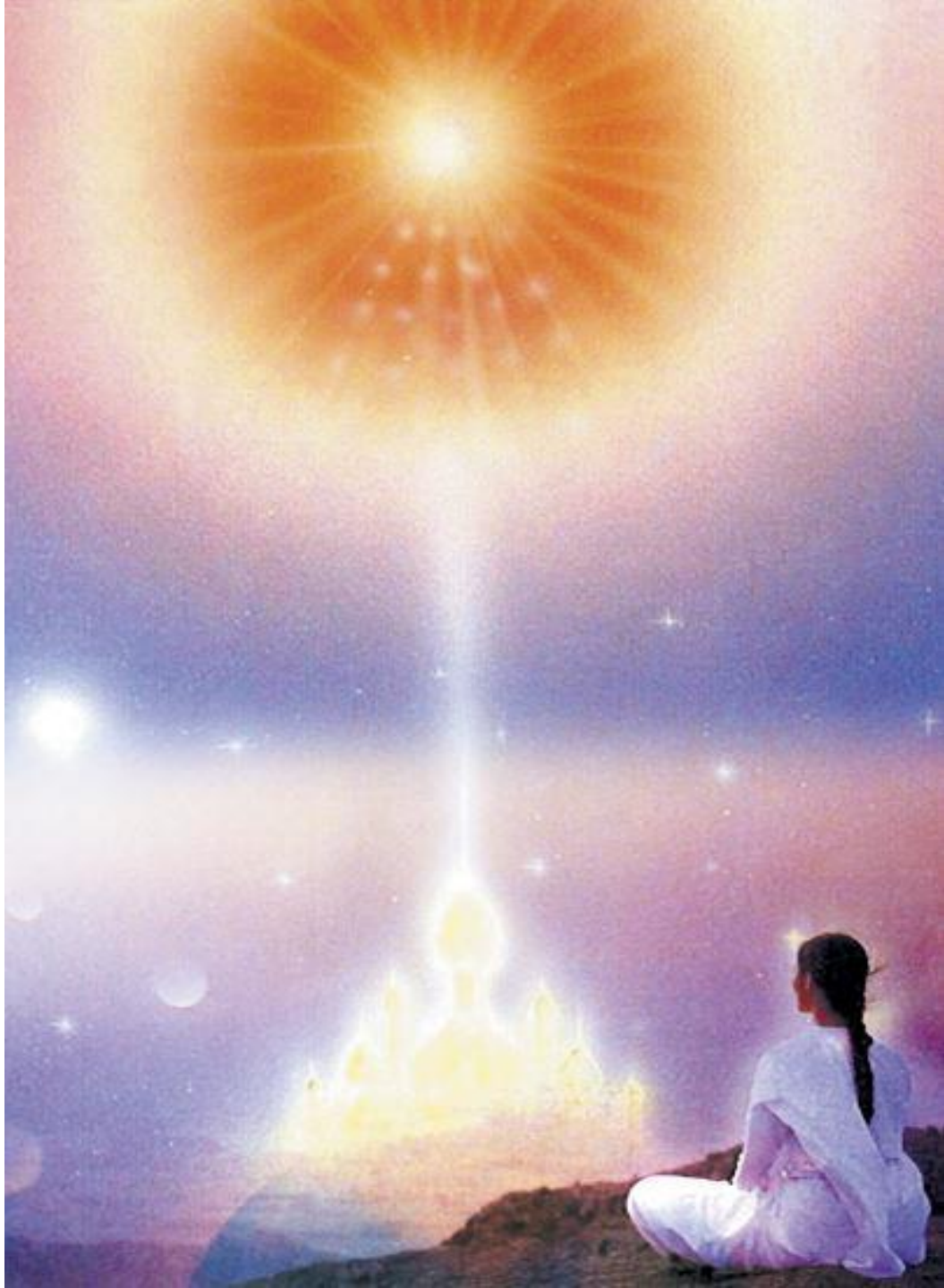

✓ बापदादा सभी ब्राह्मण बच्चों को स्मृति दिलाते हैं कि ब्राह्मण बने – अहो भाग्य! लेकिन ब्राह्मण जीवन का वर्सा, प्रॉपर्टी सन्तुष्टता है और ब्राह्मण जीवन की पर्सनालिटी प्रसन्नता है | इस अनुभव से कभी वंचित नहीं रहना | अधिकारी हो |

✓ अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |